मेरे खेत में गाय किसने हांकी ?

(ग्रामीण साहित्य माला पुष्प—6)

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

मेरे खेत में......
गाय किसने हांकी ?

[पंचतंत्र की कहानियों के समान, एक किसान की कूटनीतिक, व्यावहारिक बुद्धि पर आधारित एक सत्य घटना]

लेखक
जोगेन्द्र सक्सैना

सम्पादक
डॉ० सुशील 'गौतम'

प्रकाशक
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ

प्रकाशक :
भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
17 बी, इन्द्रप्रस्थ मार्ग
नई दिल्ली-2

प्रथम संस्करण : २,०००
द्वितीय संस्करण : ५,०००

मूल्य : 2.50 रुपये

यूनेस्को की आर्थिक सहायता से
प्रकाशित

रूप सज्जा :
डॉ० सुशील 'गौतम'

पुस्तक श्रृंखला संख्या : 123

मुद्रक
ज्ञान-हरि प्रेस
ए-३१, सेक्टर-२
नोयडा (यू० पी०)
फोन-८०५-२८०

भूमिका

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ की ओर से ग्रामीण बहिन-भाइयों को ग्रामीण साहित्य माला का छठा पुष्प भेंट करते हुए हमें अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। यह साहित्य माला साक्षरता की दिशा में आगे बढ़ने के लिए एक आवश्यक कदम है। वास्तव में, साक्षरता की मूल समस्या अक्षर ज्ञान प्राप्त करने के बाद की समस्या है। व्यक्ति लिखने पढ़ने में निरन्तर कुशल बना रहे उसके लिए आवश्यक है कि अक्षर ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद भी लिखने-पढ़ने का अभ्यास जारी रखा जाए। लिखना-पढ़ना जारी रखने के लिए सरल, मोहक, रोचक तथा उपयोगी पुस्तकों का होना अत्यन्त आवश्यक है। इसका अर्थ यह भी है कि लेखकों को भी यथेष्ट अवसर प्रदान किए जाएं।

जो लोग प्रौढ़ शिक्षा में रुचि रखते हैं और प्रौढ़ों को पढ़ने-लिखने के लिए बढ़ावा देना चाहते हैं उनके लिए सरल, उपयोगी और रोचक सामग्री उत्पादन करना बहुत आवश्यक है। इस आवश्यकता को अनुभव करते हुए भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ ने ग्रामीण जनता के लिए साहित्य-उत्पादन पर विचार विमर्श करने के लिए, हिन्दी लेखकों की सहायता लेने तथा उनकी एक गोष्ठी आयोजित करने का निश्चय किया।

यह चर्चा, विचार विमर्श तथा गोष्ठी, 4 अगस्त 1978 से 6 अगस्त 1978 तक, नई दिल्ली में, आयोजित की गई। इसका उद्‌घाटन हिन्दी के जाने-माने लेखक एवं संसद सदस्य श्री भगवती चरण वर्मा द्वारा किया गया। भारतीय ज्ञानपीठ के सचिव श्री लक्ष्मी चन्द जैन ने इसका निर्देशन किया।

जिन मशहूर लेखकों ने इस चर्चा में भाग लिया, उनमें से कुछ ये हैं :

सर्वश्री जैनेन्द्र कुमार, हरिवंश राय 'बच्चन', प्रभाकर माचवे, रमा प्रसन्न नायक, कमला रत्नम्, राजेन्द्र अवस्थी, मन्नू भण्डारी, राजेन्द्र यादव, इन्दु जैन, बालशौरी रेड्डी इत्यादि। कुछ मशहूर प्रकाशकों ने भी अपना-अपना दृष्टिकोण और अपनी समस्यायें प्रस्तुत करने की चेष्टा की। इन प्रकाशकों में से प्रमुख प्रकाशक थे सर्वश्री दीना नाथ मल्होत्रा, यशपाल जैन, कृष्ण चन्द्र बेरी, रघुवीर शरण बंसल, शीला सन्धु इत्यादि।

हम, इन सभी सहयोगियों के आभारी हैं कि उन्होंने कार्यशाला को महान सफलता प्रदान की। उन चर्चाओं के आधार पर ये दस पुस्तकें भेंट करते हुए हमें हर्ष हो रहा है। हमें पूरी आशा है कि ग्रामीण जन-समाज इसका खुशी से स्वागत करेगा, क्योंकि ये पुस्तकें उनके जीवन से, उनकी समस्याओं से, उनके परिवेश एवं उनकी संस्कृति से जुड़ी हैं।

हम यूनेस्को के आभारी हैं कि उन्होने यह गोष्ठी आयोजित करने के लिए संघ को आर्थिक सहायता प्रदान की।

इस गोष्ठी में गोष्ठी के निर्देशक श्री लक्ष्मी चन्द जैन के कुशल निर्देशन एवं सूझ-बूझ तथा प्रौढ़ शिक्षा की सम्पादिका श्रीमती बिमला दत्ता की लगन, मेहनत और भाग-दौड़ ने गोष्ठी को सफल बनाने में बहुत सहायता दी। संघ इनका भी बहुत आभारी है।

आशा है कि पाठकों को यह प्रस्तुत ग्रामीण साहित्य माला पसन्द आएगी।

शिव चन्द्र दत्ता
अवैतनिक महासचिव

भारतीय प्रौढ़ शिक्षा संघ
17-बी, इन्द्रप्रस्थ मार्ग,
नई दिल्ली.
2 अक्टूबर 1978

मेरे खेत
में
गाय
किसने
हांकी ?

समर्पण

देश के असंख्य अशिक्षित व्यवहारकुशल
ग्रामबासियों को

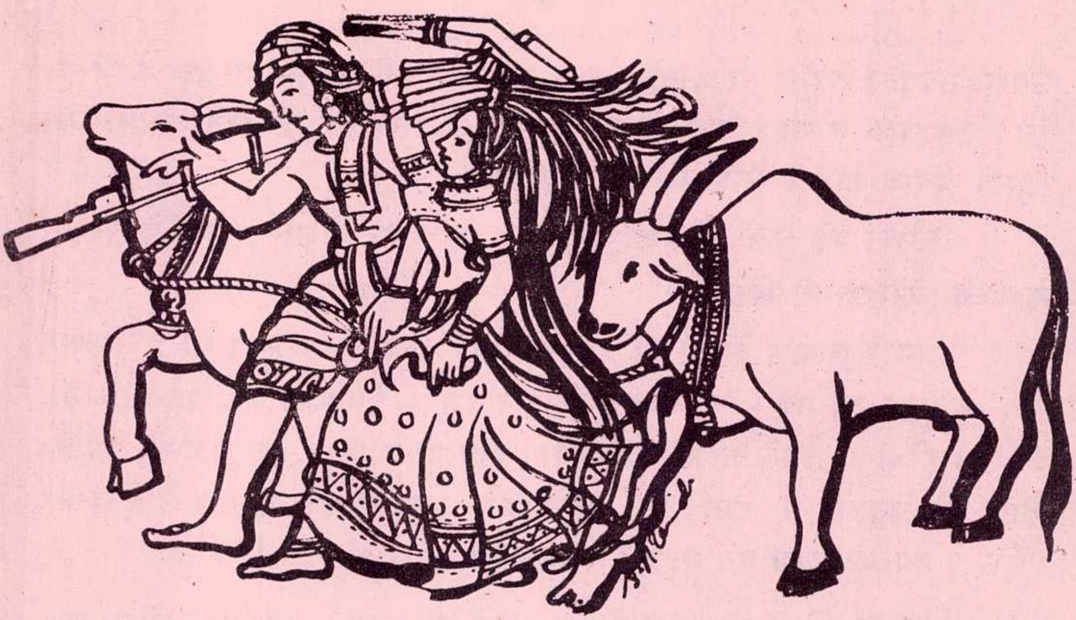

मेरे खेत में गाय किस ने हांकी ?

किसी गाँव में दो खेत थे । दोनों खेतों की मेड़ें आपस में लगती थीं । एक खेत का मालिक ब्राह्मण था और दूसरे का बनिया । खेतों के मालिक इनमें अपनी झोंपड़ियाँ बनाकर रहा करते थे । लेकिन ये आपस में कभी-कभी ही मिल पाते थे । क्योंकि वे लोग शहर के रहने वाले थे इसलिये बुवाई या कटाई आदि के समय वहाँ पहुँचा करते और अपने - अपने कामों में लग जाते थे । खेत शहर के निकट ही होने के कारण अक्सर अपने घरों को लौट जाया करते थे । उन खेतों के पास एक झोंपड़ी और भी थी जिनमें एक चमार अपने बीबी - बच्चों के साथ रहा करता था । चमार की अपनी खेती नहीं थी । इसलिये उसके पास अपने हल - बैल भी नहीं थे । हाँ, उसके पास अपनी एक गाय अवश्य थी । गाय अच्छी दुधारु थी और उसके दूध से घर की दूध, दही, घी इत्यादि की जरूरतें पूरी हो जाती थीं ।

चमार के पास गाय को खिलाने के लिये चारा नहीं था और न उसका कोई बच्चा ही इतना बड़ा था, जो उसे गाँव के बाहर लेजाकर जंगल में चरा लाया करता । हाँ, उसके पास व्यावहारिक बुद्धि की कमी नहीं थी और वह

उसका उपयोग करना भी जानता था। उस ने अपनी समस्या को हल करने के लिये एक चाल सोची। इस चाल की वजह से उसे दूसरे ही दिन ब्राह्मण के सामने जवाब देही के लिये हाजिर होना पड़ा।

चमार को देखते ही ब्राह्मण क्रोध से कड़क कर बोला—"क्यों रे चमार के बच्चे, तेरी इतनी हिम्मत।"

चमार ब्राह्मण देवता की बात को भली प्रकार समझता था। उसको मन में हँसी आ गई। उसने मन ही मन कहा—"पण्डित जी यह तो अभी आरम्भ ही है। देखते जाओ आगे क्या-क्या होता है।" किन्तु अपने मन के भावों को चतुराई से छिपा कर उसने शांत स्वर में बड़ी दीनता से पूछा—"मुझ से क्या अपराध बन पड़ा है पण्डित जी महाराज ?"

पण्डित जी ने और तेज होकर डांटते हुए कहा—"हूँ, बड़ा भोला बन रहा है, जैसे कुछ जानता ही नहीं है। दो दिन का दूध पीता बच्चा है न। तेरी गाय ने मेरे खेतों में घुस कर सब उजाड़ दिया, यह तुझे नहीं मालूम ?"

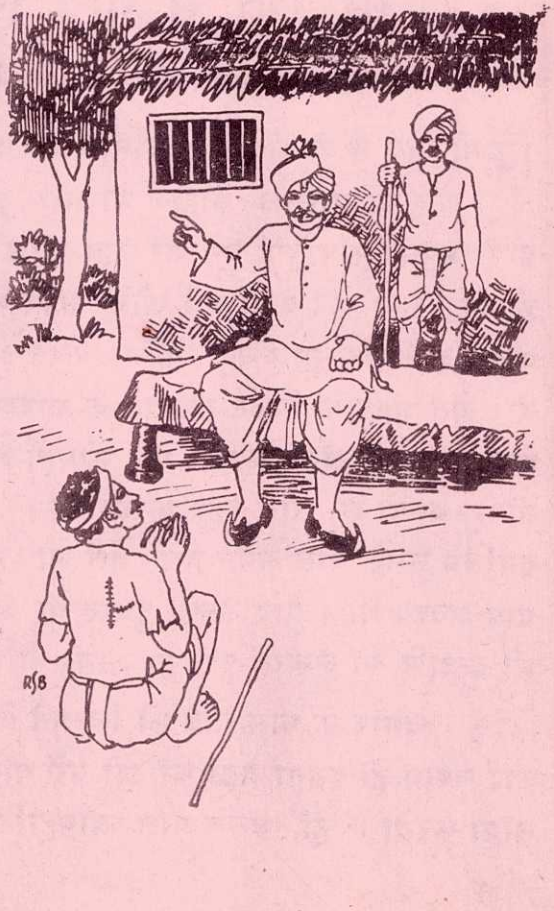

किन्तु चमार ने अपनी लाचारी जाहिर करते हुए फिर उसी दीन भाव से कहा—"नहीं मेरे मालिक, मुझे तो कुछ भी नहीं मालूम। मैं तो मजदूरी के लिये दूर गाँव गया हुआ था। मैं अभी जाकर अपनी घरवाली को डांटता हूँ...कि गाय आपके खेतों में कैसे घुस गई। अब उसका दण्ड कौन भरेगा ?"

फिर, पल भर के लिये सोचने का भाव बनाकर उसने बड़े धीरे से, बड़े गोपनीय भाव से

कहा—"मालिक इसमें कोई चाल तो नहीं है ?"

अब पण्डित जी ने थोड़ा सम्भलकर, लेकिन वैसे ही रोष भरे स्वर में पूछा— "कैसी चाल रे ?"

चमार ने फिर उसी भाव में थोड़ी नाटकीयता लाकर कहा—"यह जो आपके पड़ोस में सेठ जी हैं न...?"

वाक्य पूरा कहने से पहले उसने क्षण भर रुक कर पण्डित जी के चेहरे पर भावों को ताड़ने के लिये आँख उठाकर उनकी ओर देखा।

पण्डित जी ने अधीरता से किन्तु उसी प्रकार कठोर स्वर में पूछा— "हाँ,...फिर ?"

चमार—" महाराज यह मैं अपने मन की बात बता रहा हूँ। आप किसी से कहना नहीं, वर्ना मैं मुफ्त में मारा जाऊँगा।"

पण्डित जी ने उतावली से पूछा—"अच्छा अच्छा, जल्दी कह।"

चमार—"यह आपके पड़ोस में जो सेठ जी हैं न, यह आपकी इतनी अच्छी लहलहाती खेती को देखकर जलते हैं, और आपको बुरा - भला कहते रहते हैं। हो सकता है, मौका देखकर उन्होंने ही मेरी गाय आपके खेत में हांक दी हो।

पण्डित जी गरज कर बोले—"बकवास बंद कर। आइंदा ऐसी हरकत न हो। अब भाग, यहाँ से।"

चमार भाग तो गया, किन्तु संदेह का एक छोटा - सा बीज पण्डित जी के दिल में बोता गया। पण्डित जी तिलमिलाते रहे और बड़बड़ाते रहे। खैर, बात वहीं खत्म हो गई।

\+ \+ \+ \+

[दूसरा दिन आया]

चमार सेठ जी के दरबार में हाथ बांधे खड़ा था। वहाँ भी वैसे ही सवाल जवाबों का तांता बंध गया। चमार ने बड़े दीन भाव से अपनी सफाई पेश की। और जब वह वहाँ से चला तो अपनी बुद्धि और चातुरी से सेठ जी को भी संदेह के जाल में फंसाता गया।

जाने से पहले वह उसी नाटकीय स्वर में अपनी गोपनीय बात नमक-मिर्च लगाकर कहता गया था —

"सेठ जी। किसी से कहना नहीं मालिक, नहीं तो मैं बे-मौत मारा जाऊँगा। लेकिन कहे बिना रहा भी नहीं जाता। ये आपके पड़ौसी हैं न पण्डित जी, ये बड़े घमण्डी हैं। आपकी खेती को देख कर जलते हैं और आपको कंजूस, मक्खी-चूस और न जाने क्या-क्या कहते रहते हैं। मौका देख कर उन्होंने ही मेरी गाय आपके लहलहाते खेतों में हाँक दी थी।"

सेठ जी 'हूँ' करके मौन हो गये और चमार अपनी मूछों में मुस्कराता हुआ खिसक गया।

गाय उसी तरह कभी इस खेत में और कभी उस खेत में घुस-घुस कर उजाड़ करती रही और चमार मन में खुश होता रहा। पंडित और सेठ के दिलों में संदेह का बीज पलता रहा। वह अंकुरित हुआ और उसने मन-मुटाव

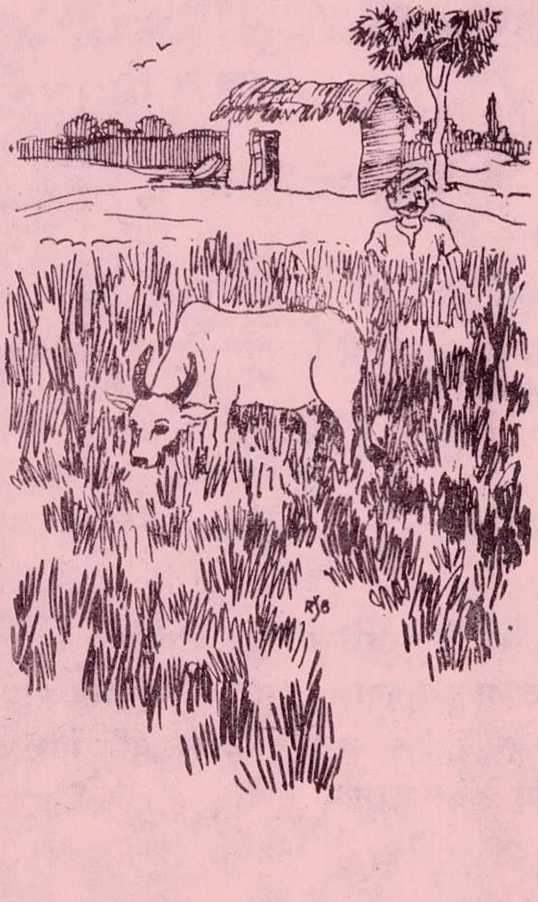

का रूप धारण कर लिया। दोनों बड़े लोगों के भ्रम की आड़ में चमार अपनी व्यवहार-बुद्धि और कूटनीति से अपना उल्लू सीधा करता रहा।

लेकिन बकरे की मां कब तक खैर मनाती। आखिर एक दिन भण्डा फूट ही गया। एक दिन पण्डित और सेठ अपने-अपने खेतों की मेड़ों पर घूमते हुए एक दूसरे के सामने आ खड़े हुए। दोनों की आँखें मिलीं। नमस्कार, पॉ लागन हुआ। कुशल-क्षेम पूछा गया और इधर-उधर की बातें होने लगीं। इस तरह मानों दोनों के दिलों में एक दूसरे की ओर से कोई मैल, कोई मन-मुटाव नहीं था। बातों-बातों में गाय का किस्सा छिड़ गया। बहस शुरू हो गई। दोनों एक दूसरे पर दोष लगाते रहे। दोनों अपनी-अपनी सफाई पेश करने लगे किन्तु फिर दोनों ही सन्तुष्ट न हो पाने पर अपनी-अपनी लोई उतार कर भिड़ गये। तेज, तीखे शब्द-बाण छूटने लगे। दोनों ने एक दूसरे की अच्छी तरह पोल खोली और जी भर कर खरी-खोटी सुनाई।

आखिर जब दोनों एक दूसरे को खूब खरी-खोटी सुना चुके और जब वे एक दूसरे की बात सुनने और समझने योग्य सहज स्थिति में हुए तब पता चला कि चमार दोनों ही को बेवकूफ बनाता चला आ रहा है। वह दोनों ही के अहंकार तथा अज्ञान से लाभ उठाता रहा है। वह बारी-बारी से गाय को उनके खेतों में चराता रहा और उन दोनों के दिलों में संदेह और कटुता पैदा करके उनको अलग किए रहा और अपना काम बनाता रहा।

\+ + + +

उपरोक्त घटना के कुछ देर बाद चमार फिर पंडित जी के दरबार में हाथ बांधे खड़ा था।

पण्डित जी चमार की ओर एक टक देख रहे थे। पतला, दुबला, एक-एक हड्डी नजर आ रही थी उसकी। सूखा चेहरा, फटे-पुराने चीथड़े कपड़े, भोला, मूर्ख-सा लगता ग्रामीण किसान, किन्तु आँखों में बुद्धि की चमक। उनके चेहरे पर एक के बाद एक भाव आता और चला जाता था। वे मूर्ख से देखे जा रहे थे। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि वे उस व्यक्ति को, जिसने

इन दो पढ़े-लिखे शहरियों के कान काट लिये थे, प्रशंसा करें या फटकार दें, उसकी बुद्धि की दाद दें या उस पर क्रोध करें। थोड़ा सहज होने पर उन्होंने आश्चर्य भरे स्वर में पूछा—"क्यों रे चमार के, तूने यह चाल क्यों चली और लोगों को इस तरह क्यों भिड़ाया।"

चमार ने कोई सीधा उत्तर न देकर हाथ जोड़ कर केवल इतना भर कहा—"पंडित जी, मैंने जो कुछ किया वह मेरी मजबूरी थी, उसके लिये मैं आपसे माफी चाहता हूँ, क्योंकि मैं दण्ड भर नहीं सकता। लेकिन मैंने ऐसा क्यों किया इसके लिये मैं आपको एक कहानी सुनाता हूँ। इससे आप खुद ही सारी बात समझ लेंगे।"

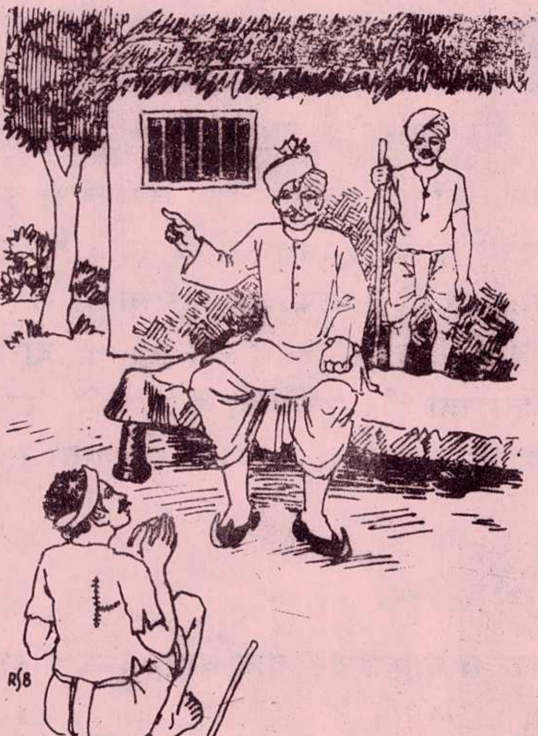

चमार बोला—"एक सियार था। उसके बच्चा नहीं था। एक दिन उसने जंगल में देवी के मन्दिर में जाकर मनौती मांगी और माँ के सामने निवेदन किया कि मेरी मनोकामना पूरी होने पर मैं आपके सामने एक शेर और

एक सुअर की बलि चढ़ाऊँगा। सियार की बातें सुन कर सियारिन ने घबड़ा कर पूछा—"शेर और सुअर कहाँ से लाओगे तुम ? झूठी मनौती क्यों मानते हो ?"

सियार ने उसे चुप करते हुए कहा—"तू कुछ बोल मत। बस देखे जा। मैंने सब प्रबन्ध कर लिया है।"

जिस बन में सियार रहता था उसी में पहाड़ी पर एक शेर और घने जंगल में एक अकेला सुअर रहता था। दोनों ही बलवान थे। दोनों ही को अपने बल पर घमण्ड था और वे उसकी डींग हांका करते थे। शेर जंगल का राजा होता है लेकिन सूअर यह मानने को तैयार नहीं था। सूअर अर्ध-चन्द्र के समान अपने पैने दांतों का डर दिखाना चाहता था लेकिन शेर को इसकी परवाह नहीं थी। उसे अपने बल के साथ-साथ चुस्ती, फुर्ती, पैने दांतों और पंजों के नाखूनों पर नाज था। फिर भीं दोनों ही एक दूसरे के जानी दुश्मन थे। सियार इस बात को भली प्रकार जानता था और इसी का उसने लाभ उठाने की योजना बनाई थी।

"कहा भी है कि जब तक घमण्डी लोग एक दूसरे से मिलते नहीं तब तक वे चापलूसों की बातों में आकर और मन में गलत धारणायें बनाकर एक दूसरे का नाश करने पर तुले रहते हैं और बुद्धिमान उनकी इस कमजोरी से लाभ उठाते हैं।"

एक दिन चापलूस सियार मौका देखकर पहाड़ी पर शेर के पास पहुँचा। वह दीन भाव से एक ओर बैठ गया और हाथ जोड़, भूमि पर सिर टेक कर उसने निवेदन किया—"महाराज, क्या करूँ मैं ? अब तो और अधिक सुना नहीं जाता और इस जंगल में रहा भी नहीं जाता।"

शेर ने सहज भाव से क़हा--"क्यों रे, क्या हुआ ? कोई तुझे परेशान करता है ? बता मुझे। मैं अभी उसका कलिया बना डालूँगा।" शेर ने अपने पुष्ट और बलवान शरीर पर निगाह डालते हुए कहा।

सियार ने उसी प्रकार दीन भाव से कहा—"सो तो आपकी दया है, महाराज। आपके प्रताप से मेरी ओर कोई आंख उठाकर भी नहीं देख सकता। लेकिन वह अकेला सुअर है न, महाराज। वह हमेशा अपनी डींग हांकता

रहता है । अपने आपको जंगल का राजा कहता है । जब भी मिलता है आपके बारे में बुरी-बुरी बातें कहता रहता है । इतना ही नहीं माई-बाप, वह तो आपको...... ।"

यह सुन कर शेर की आंखें अंगारे बरसाने लगीं । उसने अपनी दहाड़ से जंगल को कंपाते हुए अधीरता से कहा—"इतनी हिम्मत उसकी ।" हाँ वह मेरे लिए और क्या कह रहा था ? तू रुक क्यों गया ? बता, जल्दी बता, नहीं तो मैं तेरा कलिया बनाता हूँ अभी । सियार ने जमीन में सर टेक कर माफी मांगी, जीवनदान मांगा और बड़े ही बेबसी भरे स्वर में कहा—"बताता हूँ महाराज । लेकिन हिम्मत नहीं पड़ती, वह, वह महाराज......

"क्या कहूँ,...कहा नहीं जाता...। जीभ लड़खड़ाती है महाराज ।

कहा भी है, "चतुर आदमी अपनी बात को प्रभावशाली बनाने के लिये सीधा न कहकर हमेशा उसे घुमा-फिराकर कहता है । इस से घमण्डी के अहम् को चोट पहुँचती है । और वह गुस्से में अच्छा-बुरा सोचने लायक नहीं रह जाता ।

शेर ने अब गरज कर गुस्से में लाल-पीला होते हुए कहा—"कह, जल्दी कह, नहीं तो खाता हूँ मैं तुझे, अभी ।" और वह उसकी ओर, और दो कदम आगे बढ़ आया ।

सियार ने रिरियाते हुए विनीत भाव से कहा—'कहता हूँ' महाराज, कहता हूँ । लेकिन जान बख्शी जाये ।"

कहा भी है, " कुटिल और नीच व्यक्ति अपनी बात को नमक-मिर्च मिलाये बिना कभी पेश नहीं करता । वह उसे अपनी दीन वाणी की धीमी आंच में पका कर इस प्रकार स्वादिष्ट बना देता है कि सुनने वाला उसके लिये ललचा उठता है ।"

शेर ने शांत होकर उसे दिलासा दिलाते हुए कहा—"अच्छा, अच्छा, जल्दी कह ।"

सियार--"महाराज, वह···वह दाँतला है न, वही सुअर, वह [अटक, अटक कर] आपको लीदड़ा, लीदड़ा याने लीद करने वाला, डरपोक कहता है । वह तो आपकी शान में और भी गन्दी-गन्दी बातें कह रहा था महाराज, मगर......"

शेर और बरदाश्त नहीं कर सका। वह एक दम से दहाड़ मार कर सियार पर झपटा। सियार उसके पैरों में लेट गया और गिड़गिड़ा कर जीवन दान मांगने लगा।

शेर गुर्राता हुआ एक तरफ हट कर खड़ा हो गया और फिर अपनी दहाड़ से वन के प्राणियों को दहलाता हुआ बोला—"अच्छा, तो तू मुझे उससे जल्दी मिला। अभी ले चल उसके पास।"

गीदड़ ने लाचारी से दोहरा होकर कहा—"अभी तो वह नहीं मिलेगा, महाराज। लेकिन शाम के वक्त वह इसी पहाड़ी के नीचे नाले में बने देवी के मन्दिर में रोजाना आता है और खुले में, निडर भाव से आपको गालियाँ देता है। आप वहीं उससे जवाब तलब कर लें" महाराज। लेकिन सावधान रहें, मेरे मालिक। आपको देखते ही कहीं वह वार न कर बैठे और आपको संभलने का मौका भी न दे।"

शेर शांत होते हुए बोला—"अच्छा, अच्छा। अब बकवास बन्द कर। तो फिर आज शाम को रही।" और गुर्राता हुआ वह एक ओर को चला गया। सियार भी अपना अगला दाव चलाने के लिये वहां से दबे पांव खिसक लिया।

पहाड़ से उतर कर सियार चक्कर देता हुआ अपने दूसरे शिकार की तलाश में घने जंगल में सुअर के पास पहुँचा। थोड़ी देर इधर-उधर चक्कर लगा कर वह सुअर के सामने पहुँचा और बड़े ही सहमे-सहमे और दीन भाव से भूमि पर लोट कर उसने प्रणाम किया और जीवन की रक्षा के लिये प्रार्थना की। वही नाटक रचा। पहले इधर-उधर की बातें कर, जंगल का सारा हाल बताया और फिर उलाहना देते हुए बड़ी ही आजिज़ी से बोला—"महाराज, आप तो बड़े भोले हैं। आपको अपने सिवा दीन-दुनियाँ की कोई खबर नहीं रहती। जानते हैं महाराज, आज क्या हुआ।"

"क्यों क्या हुआ"? सुअर ने अपने कान खड़े कर चोकन्ना होते हुए पूछा।

"क्या बताऊँ और कैसे बताऊँ महाराज कि क्या नहीं हुआ। सच पूछिये तो वह सभी कुछ हुआ, जो नहीं होना चाहिये था, मेरे भोले राजा।"

"ऐसी भी क्या बात हुई जो तू सीधे-सीधे न कह कर इस तरह घुमा-फिरा कर कह रहा है। मैं तेरी जात को अच्छी तरह पहचानता हूँ। तुम लोगों की नस नस में मक्कारी भरी हुई है। मुझ से कोई चाल चलने की कोशिश न करना।" सुअर ने डपट कर सावधान करते हुए कहा।

सियार बड़े ही दीनभाव से खड़ा अपना सिर हिलाता रहा। मानों सब कुछ समझ रहा हो। लेकिन वह मन ही मन हंसता भी जा रहा था कि "अरे मोटी बुद्धि के सुअर तू मेरी चालाकी को क्या समझ सकेगा। अगर तेरे अन्दर जरा भी बुद्धि होती तो तुझे सुअर ही क्यों कहा जाता। ले अब सम्हल यह शाह और यह मात। आज शाम को तेरी नरक यात्रा शुरू हो जायेगी, तेरा टिकट कट चुका है।"

फिर वह बड़ा सम्हलता हुआ धीरे-धीरे बोला—"मेरे भोले महाराज, मैं तो आपकी भलाई के लिये सच्ची ही बात कहने आया था, लेकिन अगर आप सुनना न चाहें तो लाचारी है। अच्छा फिर आज्ञा दें।" उसने निराशा भाव से जाने के लिये मुड़ते हुए कहा।

"नहीं, जायेगा कैसे? पूरी बात बता कि आज क्या हुआ?" सुअर ने गुरगुरा कर इधर-उधर टहलते हुए कहा।

"जैसी आज्ञा महाराज, लेकिन अगर आप की शान में कुछ गुस्ताखी हो जाए तो जान बख्शी जाए।"

"अच्छा, अच्छा, जल्दी बोल।" सुअर ने उतावली से कहा।

"महाराज, अभी कुछ देर पहले इसी सामने वाले पहाड़ पर महाराज सिंह राज की देख-रेख में जंगल के जानवरों की एक बड़ी सभा हुई। इस सभा में उन्होंने आपको बड़ी गन्दी, गन्दी गालियाँ दीं, जिन को मेरे जैसा एक नीच जानवर भी दोहराने में लजाता है, और कहा......

"क्यों, रुक क्यों गया? हाँ और क्या कहा।" सुअर ने डपट कर पूछा।

"और क्या बताऊँ महाराज, लेकिन आपके आदेश को अब टाल भी नहीं सकता। उन्होंने कहा, यहाँ उपस्थित सभी जानवर कान खोल कर सुन लें। "इस जंगल का राजा मैं हूँ मैं। और कोई नहीं। और कोई अगर कहता

है तो उससे कहो मैदान में आकर मुझ से दो-दो हाथ करके देख ले । वह सुअर का बच्चा जो मैला खाता है, उस में क्या दम है । मेरा अगर एक पंजा भी जम कर पड़ गया तो वह सीधा नरक पहुँचेगा । जंगल की मेरी प्रजा निर्भय होकर रहे । उपस्थित जानवर एक बार फिर अच्छी तरह सुन लें, जंगल का एक छत्र राजा मैं हूँ। तुम मेरी प्रजा हो। निर्भय होकर रहो । सभा बर्खास्त।' सो महाराज मैं भी एक कोने में दुबका सुन रहा या यह सब । सभा खत्म होते ही सीधा आपके पास चला आ रहा हूँ, बचते, दुबकते । क्योंकि आप जानते है महाराज, "सौ दुश्मन हैं, कोई भी चुगली कर सकता है ।" सियार ने अपना लम्बा, चुटीला बयान खत्म किया ।

"अच्छा, यह मजाल उस लीदड़े की। बोल कहाँ मिलेगा इस वक्त वह ! मैं तुरत-फुरत उससे हिसाब साफ करता हूँ, अभी जाकर। बोल, जल्दी बोल।" सुअर ने एक दम से चलने के लिये तैयार होकर पूछा ।

" महाराज ऐसे मौके पर उतावली अच्छी नहीं होती ।" सियार ने समझाते हुए कहा । दुश्मन कितना भी कमजोर क्यों न हो, लेकिन चतुर व्यक्ति उस पर सम्हल कर ही वार करते हैं । अगर आज्ञा हो तो में तरकीब बताऊँ, महाराज ।"

"हाँ बता, जल्दी बता, ताकि फौरन यह निपटारा हो जाये ।"

और तब उसको भी शाम को पहाड़ के नीचे नाले में बने देवी के मंदिर में आने के लिये उकसा कर वह सियारिन के पास लौट आया । और आने से पहले वह सुअर को यह भी समझाता आया कि शेर बड़ा गुस्सैल है । वह शेर को देखते ही उस पर झपट पड़े और उसे पहला वार करने का अवसर न दे।

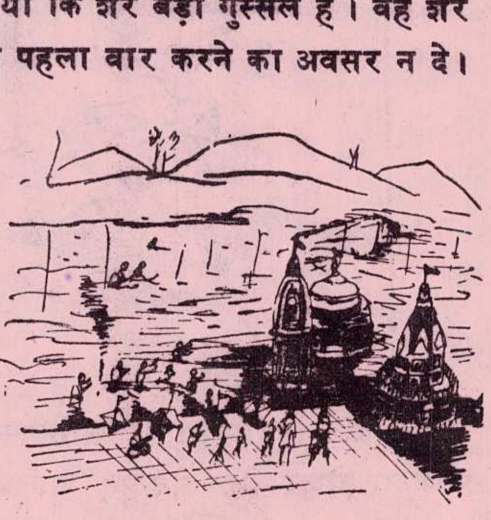

"सांझ का झुट-पुटा शुरू हुआ। पहाड़ी पर शेर ने नीचे, मन्दिर की ओर यात्रा आरम्भ की । प्रायः उसी समय घने जंगल में सुअर ने भी उसी ओर कदम बढ़ाये । दोनों एक दूसरे की ओर चौकन्ने होकर आगे बढ़ रहे थे ।

थोड़ी देर में शेर पहड़ी पर से उतर कर नीचे नैदान में आ गया और

मस्तानी लेकिन चौकन्नी चाल से मन्दिर की ओर बढ़ने लगा। उधर सुअर भी जंगल की घनी झाड़ियों में से निकल कर मन्दिर की ओर बढ़ा। लगभग एक ही समय दोनों मन्दिर के निकट पहुँचे। उनकी आँखें मिलीं। क्षण भर को वे ठिठके और तब शेर एक जोर की दहाड़ मारकर सुअर पर टूट पड़ा। इधर सुअर भी तैयार था। वह भी हुँकार भर कर शेर पर झपटा।

शेर का भरपूर हाथ सुअर पर पड़ा। सुअर उछल कर दूर जा गिरा। किन्तु इससे पहले कि शेर उस पर दूसरा वार करता, वह बिजली की गति से उठ कर उस पर झपटा और अपने पैने दांतों से उसने शेर को आर-पार चीर कर रख दिया। उधर शेर निर्जीव होकर नीचे गिरा, इधर सुअर भी लड़खड़ा कर धराशायी हो गया। दोनों महाबली माता के मन्दिर के ठीक सामने निर्जीव पड़े थे। मानों वे उसके आगे शीश नवाए दण्डवत् प्रणाम कर रहे हों।

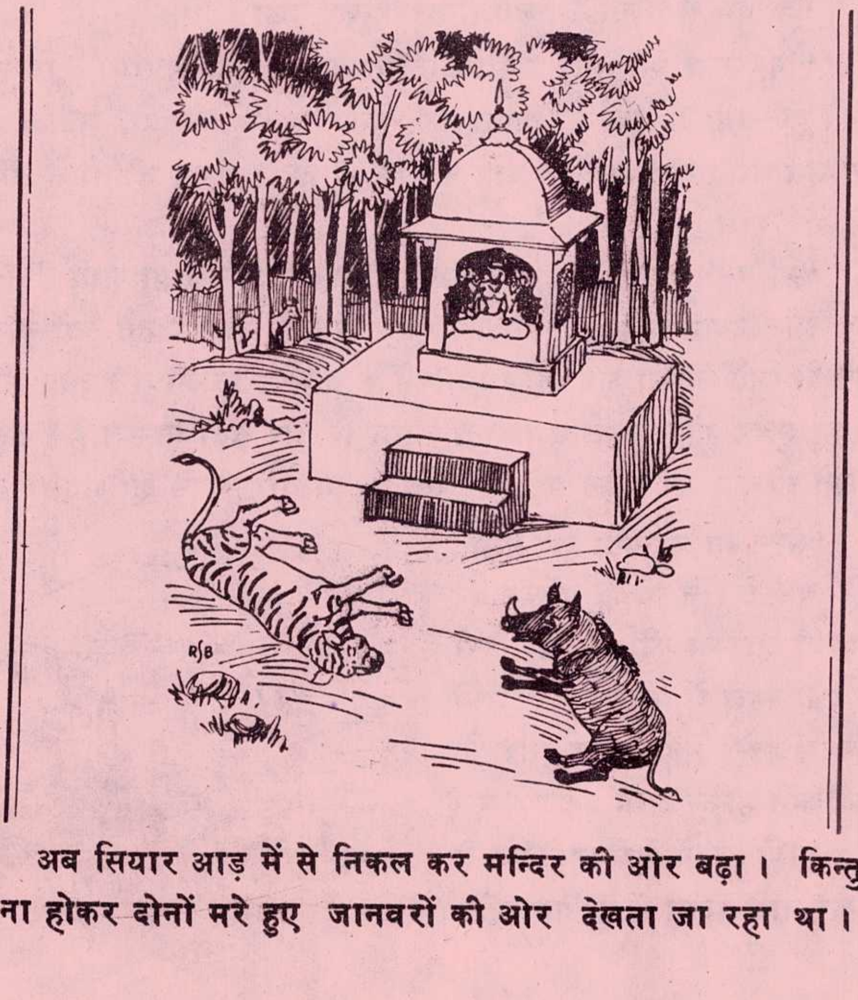

अब सियार आड़ में से निकल कर मन्दिर की ओर बढ़ा। किन्तु वह चौकन्ना होकर दोनों मरे हुए जानवरों की ओर देखता जा रहा था। पूरी

तरह तसल्ली हो जाने पर देवी के आगे पहुँच कर उसने दण्डवत् प्रणाम किया। पीछे-पीछे सियारिन भी पहुँच गई थी।

फिर उठकर सियार ने निवेदन किया—"माँ मैंने शेर और सुअर को बलि चढ़ाने का प्रण किया था। आप देख लें दोनों ही आपके सामने मरे हुए पड़े हैं। मेरी यह बलि स्वीकार करें। अब आप भी इस दीन पर दया कर हमारी मनोकामना पूर्ण करें माँ।"

और यह कह कर दोनों माँ के आगे भूमि पर लोटने लगे।

यह कहानी सुनाते हुए चमार बोला—"इसीलिये कहा है पंडित जी महाराज...व्यवहार-बुद्धि का धनी गरीब व्यक्ति भी सदैव विजयी होता है। एक अनपढ़ गंवार भी बुद्धिमान और काइयाँ पर कान से कच्चे लोगों से अक्सर अपना उल्लू सीधा करवा ही लेते हैं।"

\+ + + +

गंवार चमार की यह बात पंडित जी के कलेजे में तीर की तरह चुभी। लेकिन वह शांत बने रहे। बोले कुछ भी नहीं।

"पंडित जी महाराज अगर आप का हुकुम हो, तो एक ऐसी ही घटना और सुनाऊँ, जिस से आपको यह विश्वास हो जायेगा कि चाहे में चमार हूँ, आप मुझे नीची जाति का मानते हैं, हमें गिरा हुआ समझते हैं लेकिन मैं बेई-मान नहीं हूँ। मैंने जो कुछ किया है वह मजबूरी में किया, उस घटना की तरह मैंने आपके साथ धोखा नहीं किया। आप बड़े हैं, सेठ जी भी बड़े हैं। आप लोगों के सहारे हमारा गुजारा हो जाता है। अपने बुरे दिन काटने के लिये मैंने आप लोगों से चाल जरूर चली लेकिन दगाबाज दोस्त की तरह धोखा नहीं किया। अगर आज्ञा हो तो मैं आपको यह कहानी सुनाऊँ।"

पंडित जी, जो उस बुद्धु से लगने वाले चमार की कूटनीति भरी बातें सुनकर पहले ही प्रभावित हो गये थे, अपना झूठा बड़प्पन दिखाने के लिए उतावले होकर बोले—"अच्छा, अच्छा और जो कुछ कहना हो जल्दी कह मुझे और भी बहुत काम करने हैं।"

"जो हुकुम महाराज," जमीन छू कर उसने कहना शुरू किया। "वैसे मैं आपसे क्या अर्ज करूँ आप खुद ही गुणी हैं, शास्त्रों को पढ़ा है आपने। फिर भी अपनी सच्चाई को साबित करने के लिये वह पुरानी सुनी कहानी सुनाता हूँ जिससे महाराज मैं तो यही समझा हूँ कि किसी के भोलेपन पर विश्वास नहीं कर लेना चाहिये। दुनियाँ में कभी चालाकों की कमी नहीं रही है। वे हमेशा इसी ताक में रहते हैं कि कब किसी को छल-कपट से मूर्ख बनाकर अपना उल्लू सीधा करें। तो अब कथा सुनिये महाराज, जो इस तरह है।"

किसी देश में साधु राम और कपटी राम नाम के दो दोस्त रहा करते थे। इनमें आपस में पक्की यारी थी। कपटी राम हमेशा अपनी मक्कारी और चालबाजी से दूसरों को मूर्ख बनाकर मौज से रहता, और साधु राम हमेशा मेरी तरह गरीबी में रहा करता था। एक बार कपटी राम के मन में धनवान बनने की इच्छा पैदा हुई। उसने सोचा कि चलो साधु राम को साथ लेकर परदेश में जाएं और वहाँ जाकर उसकी मदद से धन कमाएं, और फिर उसे ठग कर खूब माला-माल होकर ऐश करें। ऐसी मन में ठान कर वह साधु राम के पास गया और उसके पैर छूकर बोला, "भाई मेरे, अब हम बुड्ढे हुए। अब बुढ़ापे में तू पहले की बातों के बारे में क्या सोचेगा ? बिना देसावर देखे बच्चों से तू क्या बातचीत करेगा ? बड़ों का कहना है कि धरती की पीठ पर देशान्तरों में घूम फिर कर जिसने अनेक प्रकार की बोलियों और पहरावों को नहीं जाना, उसका जन्म बेकार है और फिर, जब तक मनुष्य इस पृथ्वी पर खुशी से एक देश से दूसरे देश में घूमता फिरता नहीं है तब तक वह पूरी तरह से गुणी, धनवान या कलावंत नहीं बन सकता।"

कपटी राम की बात सुन कर साधु राम खुश हो गया और सब तैयारी करके शुभ मुहूर्त-में देशान्तर की यात्रा पर निकल पड़ा। वहाँ घूमते हुए साधु राम के प्रभाव से कपटी राम ने बहुत धन कमाया। बाद में बहुत धन मिलने

से प्रसन्न होते हुए दोनों बड़ी खुशी-खुशी अपने घर लौटने के लिये निकल पड़े। कहा है कि "देशान्तर में रहने वालों को विद्या, धन और कला प्राप्त करने के बाद एक कोस जितनी दूरी सौ योजन-जैसी लगने लगती है।"

बाद में ये दोनों अपने गाँव के करीब पहुँचे। तब कपटी राम ने साधु राम से कहा," दोस्त यह सब धन घर ले जाने लायक नहीं है, क्यों कि परिवार वाले और रिश्तेदार इसे माँगने लगेंगे। इसलिये इस गहरे बन में इस धन को कहीं गाड़ कर और थोड़ा-सा लेकर घर चलना चाहिये। फिर जरूरत पड़ने पर हम इस जगह से धन ले जाएंगे।

कहा है कि बुद्धिमान मनुष्य को थोड़ा-सा भी धन किसी को दिखलाना नहीं चाहिये, क्योंकि धन देखने से मुनि का मन भी डोल जाता है।"

"जिस तरह पानी में मछलियाँ माँस खाती हैं, पृथ्वी पर जिस तरह हिंसक पशु मांस खाते हैं और आकाश में जिस तरह पक्षियों द्वारा भोजन किया जाता है, उसी तरह धनवान सब जगह नोचा जाता है।"

यह सुनकर साधुराम ने कहा, "मित्र। ऐसा ही करो।"

इसके बाद कपटी राम ने एक शमी वृक्ष के नीचे गहरा गड्ढा खोद कर उसमें धन गाड़ कर कर उसे अच्छी तरह दबा दिया और उस पर निशान छोड़ दिया।

इस प्रकार दोनों अपने धन को ठीक तरह से गाड़ कर लौट गये और सुख-पूर्वक रहने लगे। एक दिन कपटी राम आधी रात को जंगल में गया और सब माल मत्ता लेकर और गड्ढा पाट कर अपने घर लौट आया। बाद में एक दिन वह साधु राम से आकर कहने लगा...

"दोस्त, परिवार बड़े होने से हम दोनों धन के बिना दुखी हैं, इसलिये उस स्थान पर जाकर हमें थोड़ा-सा धन ले आना चाहिये।"

साधु राम ने कहा, " मित्र, यही करेंगे।" और फिर दोनों ने जाकर जंगल में उस जगह को खोदा, पर धन का घड़ा खाली था। इस पर कपटी राम ने अपना सिर पीटते हुए कहा, "अरे साधु राम, तेरे सिवा यह धन और किसी ने नहीं चुराया है, क्योंकि गढ़ा फिर से भरा गया है। ला मुझे आधा धन दे, नहीं तो मैं राज दरबार में फरियाद करूँगा।"

साधु राम ने कहा, "अरे बदमाश। ऐसा मत कह, मैं साधु राम हूँ, मैं चोरी नहीं कर सकता।"

कहा भी है—

"साधु पुरुष, पर स्त्री को माता के समान, दूसरे के धन को मिट्टी के ढेले के समान, और सब जीवों को अपने समान देखते हैं।"

इस प्रकार आपस में झगड़ते हुए और एक-दूसरे को दोष देते हुए वे न्याय के लिये राज दरबार में पहुँचे। बाद में अधिकारी पुरुषों ने जब उनकी जाँच करने की तैयारी की तो कपटी राम ने कहा," तुम सब ठीक न्याय नहीं करते। कहा है कि—

"मुकद्दमें में वादी और प्रतिवादी से लड़ाई चलने पर लेख-पत्र की जाँच होती है। लेख-पत्र न होने से गवाह से पूछा जाता है और गवाह न होने पर दिव्य पुरुषों की गवाही [अग्नि-परीक्षा इत्यादि] ली जाती है ऐसा ही विद्वानों का कहना है।"

इस बारे में वृक्ष देवता मेरे गवाह की तरह हैं। वे ही हम दोनों में से एक को चोर या साहूकार ठहराएंगे। इस पर उन लोगों ने कहा, "हां, यह तुमने ठीक ही कहा है, क्योंकि जिस मुकद्दमें में एक अछूत भी गवाह हो, उसमें भी बड़ों की जरूरत नहीं पड़ती, फिर जिस में देवता गवाह हो, उसमें तो धर्मात्मा की जरूरत ही कहाँ रही ?"

तब अदालत के अधिकारी पुरुषों ने कहा, "इस बारे में हम सब को भी बड़ा कुतूहल है। सवेरे तुम दोनों हमारे साथ वन में चलना।"

बाद में कपटी राम ने अपने घर जाकर अपने पिता से कहा, पिताजी मैंने साधु राम का बहुत-सा धन चुरा लिया है, वह आप की गवाही से पच जायेगा नहीं तो मेरी जान के साथ वह भी चला जायेगा।"

पिता ने कहा, " बेटा । जल्दी कह । जिससे मैं तेरे कहे अनुसार तेरे धन में स्थिरता ला सकूँ ।"

कपटी राम ने कहा, "पिता जी उस प्रदेश में एक बड़ा बड़ का वृक्ष है और उसमें एक बड़ा खोखला है । उसके अन्दर आप जल्दी से जाकर घुस जाइये और जब सबेरे मैं आप से सच्ची बात कहने को कहूँ तो आप कहिएगा कि साधु राम चोर है ।"

इस तरह प्रबन्ध हो जाने पर सबेरे नहा-धोकर तथा साधु राम को आगे करके कपटी राम अधिकारियों के साथ शमी-वृक्ष के पास जाकर ऊँचे स्वर में बोला—

"सूर्य, चन्द्रमा, वायु, अग्नि, आकाश, पृथ्वी, जल, हृदय, वन, दिन और रात, दोनों सन्धयायें तथा धर्म इतने तत्त्व मनुष्य का आचरण जानते हैं ।"

"हे भगवती ! हे वन के देव । हम में से कौन चोर है उसे बतलाइये ।"

इस पर शमी वृक्ष के खोखले में बैठे हुए कपटी राम के पिता ने कहा, "अरे सुनो । साधु राम ने धन चुराया है ।"

यह सुन कर आश्चर्य-भरी दृष्टि से राज-पुरुष, साधु राम को धन की चोरी करने के लिये शास्त्रानुसार योग्य दण्ड देने का विचार कर ही रहे थे कि इतने में साधु राम ने गुस्से में भर कर शमी वृक्ष के खोखले के आस पास घास फूस आदि सुलगाने वाली चीजें इकट्ठी करके आग लगा दी ।

बड़ के पेड़ के खोखले के जलने से अधजले शरीर और फूटी आँखों वाला कपटी राम का पिता रोता-चिल्लाता बाहर निकला । बाद में सबने पूछा तो उन्होंने कपटी राम को शमी-वृक्ष की शाखा से लटका दिया और साधु राम की प्रशंसा करते हुये बोले—

"बड़े लोगों ने ठीक ही कहा है कि बुद्धिशाली मनुष्य को उपाय तथा विघ्नों का विचार कर लेना चाहिये ।"

और इस प्रकार साधू राम अपनी सचाई और स्थिर बुद्धि के कारण कपटी राम के कुटिल जाल से बच निकला ।

सच कहा है कि किसी को दोस्त बनाने से पहले उसे भली प्रकार परख लेना चाहिये, उसी तरह, जैसे :

पानी पीजे छान कर और मित्र कीजे जान कर ।

तो पण्डित जी महाराज मैंने आपका अपराध तो जरूर किया है लेकिन कपटी राम की तरह नहीं । मैंने अपनी बुद्धि से आप दोनों से फायदा उठाया और इस तरह अपनी गरीबी के थोड़े से दिन आपके सहारे आराम से गुजार लिये । अब तो बच्चों का दूध भी गया और जो आप दण्ड दें उसे भुगतने के लिए तैयार हूँ । अब मैं आपकी शरण में हूँ, जो चाहें सो करें ।

पण्डित जी, उस हड्डियों के ढांचे को जिस पर चमड़ी मानों ऊपर से चढ़ा दी गई थी, एक टक आंखें फाड़-फाड़ कर देखे चले जा रहे थे और वह उन के सामने दीन बना, दण्ड की प्रतीक्षा में सिर झुका कर, हाथ जोड़े खड़ा हुआ था ।

पण्डित जी की समझ में नहीं आ रहा था कि वह उसकी चतुराई और कूटनीति की तारीफ करें या अपनी मूर्खता पर अपना सिर पीट लें । उन की समझ में यह बात जरूर आ गई थी कि किसी की बात पर आँखें बंद कर के विश्वास नहीं कर लेना चाहिये । बात की सचाई की खुद जाँच कर लेने के बाद ही उस पर अमल करना चाहिये ।

आखिर पण्डित जी बोले— "शाबाश रे, चमार । तूने तो हम दोनों को अच्छा मूर्ख बनाया, रे । हमारी पण्डिताई और सेठजी की चतुराई दोनों को तूने धूल चटा दी । बोल इसका क्या दण्ड दिया जाए तुझ को ।"

चमार ने जमीन पर लोट कर, रोकर कहा—"पण्डित जी ! महाराज, आप समरथ हैं । मुझे फांसी पर भी लटका सकते हैं । परन्तु महाराज, मैंने यह सब मजबूरी में किया था । आखिर बाल-बच्चों का पेट तो पालना ही है । मुझे यही उपाय अच्छा लगा और मैंने वैसा ही किया । अब जो चाहें सजा दें, मालिक हैं आप ।"

पण्डित जी ने कुछ देर एक टक उसकी ओर देख कर कहा—" नहीं रे, तू हम से भी बड़ा पण्डित है, बड़ा चतुर है । जो हम सिर्फ किताबों में पढ़ते आये हैं, उस की तूने अन-पढ़ होते हुए भी जीति-जागती मिस ... हमारा सिर नीचा कर दिया है, हमारा मन जीत लिया है

नाराज नहीं, बहुत खुश हैं। तूने हमें बड़ा अच्छा सबक सिखाया है। लेकिन तुझे यह बात सूझी कैसे ? किसने तुझे यह बात सिखाई ?"

"किसी ने नहीं महाराज यह तो बाप-दादों की सीख है। उनसे सुनते चले आये हैं। आप तो जानते ही हैं महाराज, हमारा गुजारा किस तरह होता है, सिर्फ मेहनत, मजदूरी से। जूते बनाने का धंधा बाप-दादों ने नहीं किया सो मैंने भी नहीं सीखा। अब मेरे बच्चे भी इस काम को नहीं जानते। बड़े होकर वे भी मेरी ही तरह मेहनत मजदूरी करके अपना गुजारा कर लिया करेंगे। पण्डित जी महाराज, हम तो आप जैसे धर्मात्मा लोगों के सहारे ही जीते आये हैं, आगे भी ऐसे ही दिन कटते जायेंगे।"

"नहीं, अब ऐसे काम नहीं चलेगा। तू जानता नहीं ज़माना बदल गया है। राज बदल गया है। अब तुम लोगों को भी बदलना होगा। अच्छा कितने बच्चे हैं तेरे।" पण्डित जी ने गीले गले से पूछा उससे। पण्डित जी असल रक्त चूसने वाले कोरे पण्डित नहीं, एक अच्छे पढ़े-लिखे ऊँचे खानदानी ब्राह्मण हैं।

चमार उसी दीन भाव से गिड़गिड़ाता हुआ बोला—"महाराज, अभी तो भगवान की दया से दो ही टाबर है। एक छः वर्ष की लड़की है और दूसरा तीन वर्ष का बालक।"

"अच्छा देख अब ऐसी बदमाशी आगे मत करना। जानता है, सेठ जी और हम दोनों एक ही जगह रहते हैं। हमारे अच्छे व्यवहार हैं लेकिन तेरी वजह से हम दोनों के दिलों में फर्क आ गया था। खैर, आज की कहा-सुनी से यह बात तो साफ हो गई है, लेकिन फिर भी दिलों में मैल अभी बाकी है..."

चमार ने बीच में ही बात काटते हुए कहा—"आप कहें तो महाराज मैं उनसे भी, पैरों पड़ कर माफी मांग लूं।"

"नहीं, नहीं, ऐसा कभी मत करना। तू उन्हें नहीं जानता। अब मैं सुलट लूंगा उन से। लेकिन हाँ, गऊ माता को भूखा मत मारना। तू रोजाना खेत से चारा ले जाया कर। मैंने अपने ग्वालों से कह दिया है। और देख दूध के बिना टाबरों को भूखा मत मारना ओर जब फसल कटने का मौका आये तो खेत पर मजूरी के लिये आ जाना। मैं तुझे सब से ज्यादा मजदूरी दूंगा।"

यह सुन कर चमार फिर पण्डित जी के चरणों में लोटने लगा और गिड़गिड़ाकर कहने लगा—"पण्डित जी महाराज आप तो मानुष नहीं, देवता

हैं। मैंने आपका बड़ा अपराध किया है। पहले से जानता तो कभी आप के साथ ऐसा धोखा नहीं करता मुझे माफी बखश दो महाराज।"

"खैर, अब और आगे सुन। अपनी लड़की को तो स्कूल में पढ़ने बिठा दे और जब तेरा लड़का बड़ा हो जाये तो उसे भी स्कूल भेज देना। फिर मैं उसे शहर में जूता बनाना सिखवा दूँगा। समझा। जा, अब भाग जा। और हाँ, आगे अब ऐसी बदमाशी नहीं करना। वरना बैंतों की मार से चमड़ी उधड़वा दूँगा।"

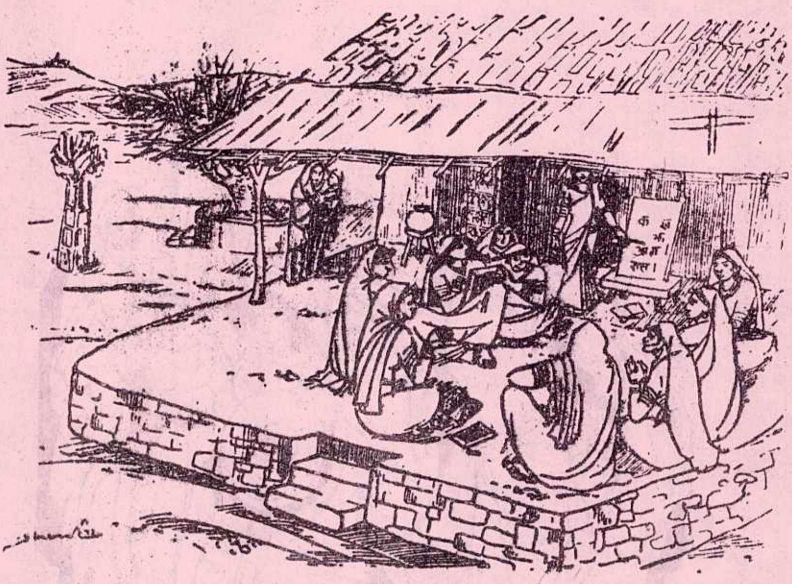

चमार बार-बार जमीन पर लोट कर और उनसे माफी मांगता हुआ अपनी झोंपड़ी की ओर चला गया। पण्डित जी खड़े-खड़े उसकी ओर मुग्ध भाव से देखते रहे और सोचते रहे—"सच है, जिसके पास बुद्धि है उसके पास बल है। तरकीब से शत्रु पर जैसी जीत मिल सकती है वैसी हथियारों से नहीं। उपाय जानने वाला अगर छोटा भी हो तो बलवान भी उसे हरा नहीं सकता। तभी तो सियार ने अपनी बुद्धि के बल से दो शत्रुओं को लड़वा कर जंगली जानवरों का दुःख दूर कर दिया। और साधु राम ने अपनी चतुराई से कपटी राम का भण्डा फोड़ कर अपनी इज्जत बचाने के साथ अपने हिस्से का धन भी वसूल कर लिया।"

✲✲✲

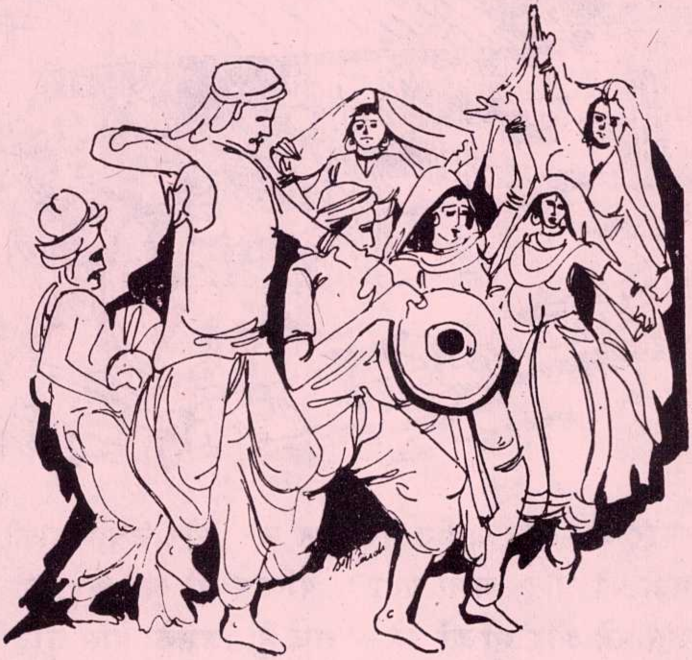

ग्रामीण साहित्य माला के अन्य पुष्प

1. बिटिया का गीत	शिवगोबिन्द त्रिपाठी
2. राधिया लौट आई	कमला रत्नम्
3. नयी जिन्दगी	गणेश खरे
4. समाज का अभिशाप	ब्रह्म प्रकाश गुप्त
5. कल्याण जी बदल गये	अ० अ० अनन्त
6. एक रात की बात	इन्दु जैन
7. जीवन की शिक्षा (लोक कथाएं)	नारायण लाल परमार
8. आग और पानी	डॉ० प्रभाकर माचवे
9. शहर का पत्र गाँव के नाम	डॉ० योगेन्द्र नाथ शर्मा 'अरुण'
तथा	
बढ़ते कदम	विमला लाल